व्यक्तित्व को समझने के लिए व्यक्तित्व के सिद्धान्तों को समझना आवश्यक है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न आधारों पर व्यक्तित्व के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, जिन्हें निम्न सारणी से स्पष्ट किया जा रहा है—

व्यक्तित्व सिद्धान्त का उपागम (Theories adopting the Approach)	मनोवैज्ञानिक (Psychologists)
1. प्रकार-उपागम (Type-approach)	हिप्पोक्रैट, क्रेश्चमर, शेल्डन तथा जुंग।
2. गुण-उपागम (Trait-approach)	ऑलपोर्ट, कैटेल।
3. प्रकार-गुण-उपागम (Type cum Trail-Approach)	आइजैंक।
4. मनोविश्लेषणात्मक उपागम (Psycho-analytic Approach)	फ्रायड, व्यक्तिगत मनोविज्ञान का सिद्धान्त-एडलर, जुंग का विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान, हार्ने का सामाजिक सम्बन्धों का सिद्धान्त, एरिक्सन का मनोवैज्ञानिक विकास का सिद्धान्त।
5. मानवीय-उपागम (Humanistic Approach)	कार्ल रोजर, मैसलो।
6. अधिगम-उपागम (Learning Approach)	डॉलर्ड, मिलर, बंडूरा, वॉल्टर।

उपरोक्त में से कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्तों की विस्तृत चर्चा आगे की जा रही है।

फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (PSYCHO-ANALYTIC THEORY OF FREUD)

व्यक्तित्व को जानने, समझने सम्बन्धी यह सिद्धान्त मनोविश्लेषणात्मक सम्प्रदाय की देन है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। फ्रायड ने अपने सिद्धान्त के माध्यम से व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अग्र विचार प्रस्तुत किए—

Scanned with CamScanner

1. मानव व्यवहार के मूल में उसकी मूल प्रवृत्तियाँ कार्य करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति में उसकी मूल प्रवृत्तियों के अतिरिक्त दो मूल प्रवृत्तियाँ—(I) जीवन मूल प्रवृत्ति (Life Instinct) तथा (II) मृत्यु मूल प्रवृत्ति (Death Instinct) पायी जाती हैं। व्यक्ति का काफी कुछ व्यवहार एवं व्यक्तित्व की संरचना इन्हीं दोनों प्रवृत्तियों से निर्देशित करती है।

2. मानव में जितनी मूल प्रवृत्तियाँ, प्रेरणाएँ (Impulses) तथा चालक (Motives) पाए जाते हैं, उन सबमें सबसे अधिक शक्तिशाली चालक तथा प्रेरणा पुंज उसकी काम भावनाएँ (Sexual Desires) हैं। यौन आवश्यकताओं की (Sex Needs) की पूर्ति फ्रायड के अनुसार मानव व्यवहार का केन्द्रीयभूत है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यवहार इसी के द्वारा संचालित होता है। कामेच्छाओं की संतुष्टि पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का संतुलित विकास तथा उचित समायोजन निर्भर करता है।

3. मानव व्यवहार के संचालन में मन (Mind or Psyche) की प्रमुख भूमिका रहती है। मानव मन के 3 भाग किए जा सकते हैं—

मन के भाग/प्रकार	संचालित होने वाला व्यवहार
1. चेतन मन (Concious Mind)	चेतन व्यवहार (Concious Behaviour)
2. अवचेतन मन (Semi-Concious Mind)	अवचेतन व्यवहार (Semi-Concious Behaviour)
3. अचेतन मन (Un-concious Mind)	अचेतन व्यवहार (Un-concious Behaviour)

फ्रायड ने व्यक्ति के व्यवहार और उसके व्यक्तित्व की संरचना में अचेतन व्यवहार को सबसे अधिक महत्व दिया है। **फ्रायड** के अनुसार चेतन व्यवहार की पूर्ण चेतना होती है तथा जिसे व्यक्ति जान-बूझकर करता है, ऐसा व्यवहार तो मनुष्य द्वारा किए जाने वाले सम्पूर्ण व्यवहार का केवल 1/10 मात्र ही होता है, शेष 9/10 व्यवहार क्रियाएँ तो व्यक्ति के अवचेतन तथा अचेतन मन द्वारा ही संचालित की जाती है।

4. फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना में इदं (Id), अहं (Ego), तथा पराहम् (Super Ego) नाम के तीन घटकों को विशेष महत्व दिया। ये तीनों घटक एक सुसंगठित तथा समरस इकाई के रूप में कार्य करते हैं।

इदम् में व्यक्ति के व्यवहार और व्यक्तित्व से सम्बन्धित पाशविक प्रवृत्तियों और अनैतिक भावनाओं का संग्रह है। इसी के माध्यम से व्यक्ति इन्द्रिय जनित सुखों की खोज करता है।

अहम् व्यक्ति की विवेचन शक्ति है जो वास्तविकता के धरातल पर अपना कार्य करता है। मनुष्य की कौन-सी इच्छाओं की कैसे और कितनी संतुष्टि होनी है, यह अहम् ही तय करता है।

पराहम् व्यक्तित्व के आदर्श और नैतिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार से इदम् पार्श्विक इच्छाओं का, अहम् वास्तविक जगत् का तथा पराहम् सामाजिक नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करता है। इदम् और पराहम् के बीच संघर्ष होना सामान्य बात है। परन्तु अहम् के दृढ़ तथा क्रियाशील होने से यह संघर्ष अस्थायी रहता है तथा व्यक्ति वास्तविकता के साथ समायोजन कर लेता है। इसके विपरीत अहम् दुर्बल तथा निष्क्रिय होता है तो व्यक्ति को समायोजन करने में कठिनाई होती है तथा उसका व्यक्तित्व खंडित हो जाता है। इस प्रकार फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व वास्तव में इदम्, अहम् तथा पराहम् के बीच परस्पर समायोजन का परिणाम है।

शैल्डन का शरीर रचना सिद्धान्त
(CONSTITUTIONAL THEORY OF SHELDON)

व्यक्तित्व की व्याख्या जीव विज्ञान की पृष्ठभूमि वाले मनोवैज्ञानिक **डब्लू. एच. शैल्डन** ने शरीर रचना के आधार पर करके 'शरीर रचना सिद्धान्त' का प्रवर्तन किया। उन्होंने शरीर रचना तथा व्यक्तित्व के गुणों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। शैल्डन ने शरीर रचना के आधार पर व्यक्तित्व को तीन भागों में विभाजित किया जिसे पिछले अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

जुंग का मनोवैज्ञानिक गुण सिद्धान्त
(PSYCHOLOGICAL TRAIT THEORY OF JUNG)

जुंग के अनुसार चेतन मन अचेतन मन का ही परिणाम होता है। जुंग ने अचेतन मन की सामग्री को 2 प्रकारों में बाँटा है—

I. वैयक्तिक अचेतन से सम्बन्धित (Related to Personal Un-conciousness)—इसमें वे स्मृतियाँ, अनुभव और इच्छाएँ होती हैं जो दमित होती हैं।

II. सामूहिक अचेतन मन से सम्बन्धित (Related to Collective Un-conciousness)—इसमें वे तत्व होते हैं जो पूर्वजों के वंशानुक्रम द्वारा ग्रहण किए जाते हैं।

जुंग ने अचेतन मन की सामग्री को Archetybes के नाम से सम्बोधित किया है और बताया कि उसकी प्रकृति सार्वभौमिक होती है लेकिन यह एक संस्कृति विशेष तक ही सीमित रहती है। उन्होंने बताया कि काम वासना जीवन की एक सामान्य शक्ति है जो उसके समस्त व्यवहारों को शक्ति प्रदान करती है।

ऑलपोर्ट का शील–गुण सिद्धान्त
(ALLPORT'S TRAIT THEORY)

ऑलपोर्ट के व्यक्तित्व के सिद्धान्त को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। ऑलपोर्ट के अनुसार शील-गुण ही व्यक्तित्व की आधारभूत इकाई है। व्यक्ति अपने निरन्तर विकास क्रम में कुछ प्रवृत्तियाँ

Scanned with CamScanner

अपने अन्दर विकसित करता है, यही उसके व्यक्तित्व के शील-गुण होते हैं। ऑलपोर्ट ने तीन प्रकार के शील-गुणों का उल्लेख किया—

1. मुख्य गुण (Cardinal Traits)—मुख्य गुणों की निम्न विशेषताएँ होती हैं—

I. इन गुणों का प्रभुत्व व्यक्ति के व्यवहार के समस्त पक्षों पर होता है।

II. ये गुण बहुत सीमित संख्या में (एक या दो) व्यक्ति में पाए जाते हैं।

III. मुख्य गुण अन्य गुणों पर अधिकार जमाते हैं।

मुख्य गुण का उदाहरण—यदि किसी व्यक्ति में उत्तेजना नियंत्रित करने की विशेषता होती है तो कठिन से कठिन परिस्थितियों में या लड़ाई-झगड़े में भी अपने क्रोध पर काबू रखता है।

2. केन्द्रीय गुण (Central Traits)—केन्द्रीय गुणों की निम्न विशेषताएँ होती हैं—

I. ये कुछ ही गुण होते हैं।

II. इन गुणों से एक व्यक्ति का सामान्य रूप से वर्णन किया जा सकता है।

केन्द्रीय गुण के उदाहरण—सच्चाई, ईमानदारी, सहयोग आदि।

3. द्वितीयक गुण (Secondary Traits)—द्वितीयक गुणों की निम्न विशेषताएँ होती हैं—

I. ये गुण मुख्य या केन्द्रीय गुणों की तरह तेज नहीं होते।

II. ये बहुत छोटी-छोटी स्थितियों में दिखाई देते हैं।

III. ये किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का एकीकृत हिस्सा नहीं होते।

मुख्य गुण किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को विशेष बनाते हैं। अन्य दोनों गुण अन्य व्यक्तियों में भी समान पाए जा सकते हैं। इस प्रकार ऑलपोर्ट ने अपने सिद्धान्त में स्पष्ट किया कि विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न गुण होते हैं, परन्तु सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की सीमा में व्यक्तियों में सामान्य गुण भी होते हैं।

कैटल का विशेषक सिद्धान्त
(TRAIT THEORY OF CATTELL)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन आर. बी. कैटल ने किया था। उन्होंने कारक विश्लेषण नाम की सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग करके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करने वाले कुछ सामान्य गुणों को व्यक्त किया तथा इन्हें व्यक्तित्व विशेषक (Personality Traits) कहा।

कैटल ने व्यक्तित्व का व्याख्या करते हुए कहा कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व वह विशेषता है, जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सके कि किसी दी गई परिस्थिति में वह व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा। उनके अनुसार व्यक्तित्व विशेषक मानसिक संरचनाएँ हैं तथा व्यक्ति की व्यवहार प्रक्रिया की निरन्तरता और नियमितता के द्वारा जाना जा सकता है। कैटल का विश्वास था कि कुछ सामान्य विशेषक होते हैं जो सभी व्यक्तियों में कुछ-न-कुछ मात्रा में पाए जाते हैं तथा कुछ विशिष्ट विशेषक होते हैं। कैटल ने विशेषकों को दो प्रकार का बताया—

1. सतही विशेषक (Surface Traits)—सतही विशेषक व्यक्ति के द्वारा अभिव्यक्त किए जा रहे व्यवहार से परिलक्षित होते हैं तथा व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित प्रत्यक्षतः प्रभावित करते हैं।

Scanned with CamScanner

11. स्रोत विशेषक (Source Traits)—सतही विशेषक के विपरीत स्रोत विशेषक व्यक्ति के व्यवहार के पीछे छिपे रहते हैं तथा अभिव्यक्त व्यवहार को अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित व निर्धारित करते हैं।

स्पष्टतः स्रोत विशेषकों का महत्व सतही विशेषकों से अधिक है। कैटल के अनुसार विभिन्न विशेषकों के परस्पर आन्तरिक सम्बन्ध अत्यन्त जटिल होते हैं तथा उसकी परस्पर अन्तर्क्रिया ही व्यक्तित्व को अन्ततः निर्धारित करती है। व्यक्ति के तात्कालिक उद्देश्यों से सम्बन्धित विशेषक उसके मुख्य तथा अन्तिम उद्देश्यों से सम्बन्धित विशेषकों के आधीन रहकर कार्य करते हैं।

कैटल द्वारा बनाए गए प्रसिद्ध व्यक्तित्व मापन उपकरण 16 पी. एफ. प्रश्नावली (16 PF) में व्यक्तित्व के 16 द्विध्रुवीय कारकों को सम्मिलित किया गया है। व्यक्तित्व के इन सोलह कारकों को तालिका में प्रस्तुत किया जा रहा है—

Scanned with CamScanner

आइजेंक का व्यक्तित्व सम्बन्धी जैविक शीलगुण सिद्धान्त
(EYSENCK'S BIOLOGICAL TRAIT THEORY OF PERSONALITY)

आइजेंक ने व्यक्तियों की उनके व्यक्तित्व गुणों या विशेषकों के आधार पर व्याख्या किया तथा उन्हें वर्गों या प्रकारों में विभाजित करके दोनों ही दृष्टिकोणों का समन्वय किया। वह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्णन करने तथा उसकी पहचान कायम करने के लिए उसके व्यक्तित्व गुणों की ही चर्चा नहीं करते बल्कि इन गुणों के आधार पर व्यक्तियों को निश्चित वर्गों में बाँटने का भी प्रयत्न किया है।

आइजेंक ने व्यवहार सम्बन्धी विशेषता और व्यक्तित्व गुणों (Traits) को संगठित करके चार वर्ग बनाए—

1. अन्तर्मुखी प्रवृत्ति (Introversion)
2. बहिर्मुखी प्रवृत्ति (Extroversion)
3. उन्मादावस्था (Neutrocism)
4. साइकोटिसिज्म (Psychoticism)।

इनमें से पहले दो प्रकार सामान्य व्यक्तियों को वर्गीकृत करने में प्रयुक्त हो सकते हैं तो अन्तिम दो प्रकारों को असामान्य व्यक्तियों के वर्गीकरण या व्याख्या करने हेतु काम में लाया जा सकता है।

●●

Scanned with CamScanner